ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 44 कुल पृष्ठ-8 16 से 22 दिसम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 मा.शु.-12

गुरुकुल धीरणवास का 50वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संस्कारों की जननी है

– स्वामी आर्यवेश

लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली से नैतिक रूप से सक्षम व्यक्ति तैयार नहीं हो सकते

– स्वामी आदित्यवेश

देश को एक नई दिशा देने वाले पहले दार्शनिक थे स्वामी दयानन्द

– चौ. हरिसिंह सैनी

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) का 50वाँ वार्षिकोत्सव 4 व 5 दिसम्बर 2021 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ 4 दिसम्बर, 2021 को प्रातः 9:00 बजे यज्ञ से हुआ। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य देवदत्त शास्त्री जी रहे तथा मुख्य यजमान आकाशवाणी हिसार के निदेशक डॉ. पवन कुमार व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज देवी, गुरुकुल के विशेष सहयोगी सेठ धर्मवीर सीसवाला व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिल गर्ग, श्री महेंद्र आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भारती देवी गुरुकुल के मंत्री श्री दलबीर आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी रहे।

यज्ञ के उपरांत 10.30 बजे गुरुकुल की परम्परा के अनुसार ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राजेंद्र गावड़िया वह गुरुकुल की समस्त कार्यकारिणी के सदस्यों की उपस्थिति में गुरुकुल के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने ध्वजारोहण किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय व्यायामचार्य सहसरपाल आर्य व सोनू आर्य ने व्यवस्था संभाली।

ध्वजारोहण के उपरान्त कार्यक्रम का संचालन मुख्य मंच से प्रारम्भ किया गया। मंच का पहला सम्मेलन समाज सुधार सम्मेलन के रूप में प्रारम्भ हुआ जिसमें मुख्य अतिथि गावड़िया कंस्ट्रक्शन कंपनी के मालिक, समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री राजेन्द्र सिंह गावड़िया जी, विशिष्ट अतिथि हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौधरी कमल सिंह जी, मुख्यवक्ता के रूप में सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं गुरुकुल धीणवावास के कुलपति स्वामी आर्यवेश जी रहे। बहन कल्याणी आर्या ने अपने गीतों के माध्यम से लोगों में समाज सुधार की अपील की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान व गुरुकुल धीणवास, हिसार के कुलपति स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए युवाओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली संस्कारों की जननी है। उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में मानव निर्माण के साथ–साथ संस्कृति को बचाने व

ऋषियों की परंपरा को आगे बढ़ाने के कार्य भी किये जा रहे हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ही सही मायने में मानव निर्माण का कार्य किया जा सकता है। मैं आर्य समाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं तथा समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों से अपील करता हूँ कि गुरुकुलों का अधिक से अधिक सहयोग करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने में अपना–अपना योगदान दें, जिससे पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक तीव्र गति प्रदान की जा सके।

गुरुकुल धीरणवास के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मजबूत किया जाए। क्योंकि लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली से हम नैतिक रूप से सक्षम व्यक्ति तैयार नही कर सकते। राष्ट्रवादी युवाओं का निर्माण एवं मातृ–पितृ सेवाभावी बच्चे गुरुकुलों से ही तैयार होना सम्भव है।

चौधरी हरिसिंह सैनी ने कहा कि स्वामी दयानंद ने सबसे पहले आर्ष शिक्षा की ओर देश का ध्यान खींचा। वो पहले दार्शनिक थे जिन्होंने देश को एक नई दिशा दी।

दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक आर्यरत्न सम्मान समारोह का आयोजन स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि गुरुकुल के पूर्व प्रधान चौधरी युद्धवीर सिंह आर्य रहे। इस अवसर पर पांच आर्य जनों को आर्यरत्न से विभूषित किया गया।

निम्नलिखित महानुभावों को आर्य रत्न सम्मान से किया गया सम्मानित

आर्य रत्न सम्मान समारोह का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम का संचालन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया। समारोह में आर्य समाज में विशेष योगदान के लिए आर्य समाज के वरिष्ठ महानुभावों को आर्य रत्न सम्मान देने से पूर्व उनका जीवन परिचय आचार्य देवदत्त शास्त्री द्वारा पढ़कर सुनाया गया। स्वामी आर्यवेश व कार्यकारिणी के सदस्यों ने आर्य रत्न सम्मान पत्र, श्रीफल, ओ३म् पट्टिका, फूल मालाएँ तथा शॉल भेंट कर हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री व आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान चौधरी हरिसिंह सैनी जी, आर्य समाज में पिछले लगभग 50 वर्षों से ज्यादा का समय देने वाले आर्य समाज मुकलान के प्रधान व नागौरी गेट हिसार के संरक्षक, गुरुकुल धीरणवास के पूर्व प्रधान 96 वर्षीय श्री बदलूराम आर्य, गुरुकुल आर्य नगर हिसार के संस्थापक आचार्य व वरिष्ठ विद्वान आचार्य श्री रामस्वरूप शास्त्री, गुरुकुल धीरणावस के पूर्व प्रधान बालसमंद से श्री इंद्रजीत आर्य तथा आर्य समाज व खाप पंचायतों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लगातार संघर्ष करने वाले महात्मा श्री शमशेर सिंह आर्य लाडवा को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 10 वरिष्ठ आर्यजनों को आर्य गौरव सम्मान भी प्रदान किया गया।

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

साहसिक योद्धा और पुरोधा – स्वामी श्रद्धानन्द

– श्री देवनारायण भारद्वाज

'यथा नाम तथा गुण' सुख व आनन्द की प्रतिमूर्ति परदादा सुखानन्द, निर्भय वीर, ईश्वर भक्त पितामह गुलाबराय और अगाध शिवभक्त पिता नानकचन्द के धर्मनिष्ठ परिवार में, ग्राम तलबन जिला जालन्धर (पंजाब) की पुण्यधरा पर, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सं. 1913 वि. के पावन दिवस को जन्में बालक का नाम मुन्शीराम प्रचलित हो गया था। ये अपने चार भाई और दो बहनों में सबसे कनिष्ठ थे। इनके पिता जी अंग्रेजी शासन में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी थे, जिन्होंने लाहौर, हिसार, मेरठ, बरेली, बदायूँ, काशी, बाँदा, मिर्जापुर, मथुरा, खुर्जा आदि स्थानों में प्रतिष्ठापूर्वक शासन किया। मुंशीराम की बाल्यावस्था एवं किशोर वय अपने पिता के साथ व्यतीत होती रही। इन्होंने बनारस के क्वीन्स कालेज, जयनारायण कालेज और प्रयाग के म्योर कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। वंश परम्परा के अनुसार इनमें धर्म–कर्म एवं भक्ति का विशेष प्रभाव था। विश्वनाथ जी के दर्शन किए बिना ये जलपान तक नहीं करते थे। बांदा में ये नियमित रामचरितमानस का पाठ सुनते थे और प्रत्येक आदित्यवार को एक पैर पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। एक दिन इनके किशोर हृदय को ऐसी ठेस लगी, कि इनकी समस्त रुढ़िवादी धार्मिक कट्टरता तिरोहित हो गई। हुआ यह कि ये काशी के विश्वनाथ के दर्शनार्थ गए, तो इन्हें बाहर ही रोक दिया गया क्योंकि मन्दिर में रीवां की महारानी दर्शन कर रहीं थीं। इस प्रकार मूर्तिपूजा से इनको विरक्ति हो गई।

ऐसी ही पाखण्डपूर्ण अनेक घटनाओं के कारण मुंशीराम के मन में उथल–पुथल मच गई। पिता का अर्दली जोखू मिसिर रसोई में अपने लिए माँस पकाये तो कोई बात नहीं, किन्तु उसमें से कोई चिलम भरने के लिए आग ले लेता, तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाता। मन्दिर, गुफा, घाट में साधना करने वाले ढोंगी पुजारी साधुओं की वासना की शिकार युवतियों के चीखने पर इनको दौड़कर उन्हें बचाना पड़ा। बनारस में एक वेदपाठी पण्डित के घृणापूर्ण कुत्सित अनाचार को देखकर इन्हें संस्कृतभाषा और उसकी विद्या ही हेय लगने लगी। वे जायें तो जायें कहाँ?मुस्लिममत के दुरित दुराव से ये पूर्व से ही परिचित थे। इन्होंने ईसाई बनने की ठान ली। बपतिस्मा की तिथि तय करने के लिए पादरी के घर गये। उसका पर्दा हटाया तो वहाँ एक पादरी व नन को आपत्तिजनक दशा में देखकर उल्टे पाँव घर लौट आये। अब ये पूर्णरूपेण नास्तिक हो गये। यदाकदा मन्दिर चले जाते थे। मूर्तियों को प्रणाम भी कर लेते थे, किन्तु पण्डे–पुजारियों के आडम्बर–पाखण्ड की आलोचना करने से भी बाज नहीं आते थे। मुंशीराम का मन पढ़ाई में कम प्रगल्भता में अधिक लगता था। अंग्रेजी उपन्यासों का पढ़ना, शतरंज–ताश खेलना, इधर–उधर नाच–गाने–मुजरे में जाना और रईसजादों के साथ भाँति–भाँति के व्यंसनों में फंसे रहना मुंशीराम की नियमित दिनचर्या बन गई थी।

अभी मुंशीराम की शिक्षा पूर्ण भी न होने पाई थी, कि इनका विवाह बारह वर्ष की बालिका शिवदेवी से कर दिया गया। तरुण मुंशी राम ने अंग्रेजी उपन्यासों की नायिकाओं के रूप में जो स्वप्न अपनी अर्द्धांगिनी के सम्बन्ध में संजोये थे, वे सब चकनाचूर हो गये। पर वे इनके जीवन की आधार व रक्षिका अवश्य सिद्ध हुई। दुर्व्यसनग्रस्त मदिरा से अचेत हुए मुंशीराम को देर रात्रि में जब लड़खड़ाते हुए घर पहुँचाया जाता, तब शिवदेवी ही इनको संभालती। इनकी उल्टी आदि के वस्त्र बदलकर गर्म दूध पिलाती और सुला देतीं। जब प्रातःकाल को जगते तो यही उनकी सेवा करती हुई जागती मिलतीं। सं. 1936 वि. में स्वामी दयानन्द का बरेली आगमन हुआ। पिता को तो शान्ति व्यवस्था के नाते स्वामी जी के व्याख्यान सुनने थे। उन्होंने इनके न चाहने पर भी आग्रह पूर्व मुंशीराम को स्वामी जी के सत्संग में सम्मिलित होने की प्रेरणा की। आदित्यमूर्ति दयानन्द के महान् व्यक्तित्व के दर्शन कर, तथा सभा में पादरी स्काट व अन्य यूरोपियनों को बैठा देखकर इनके मन में श्रद्धा का उत्स प्रस्फुटित हो उठा। इन्होंने तीन अवसरों पर स्वामी जी के समक्ष ईश्वर के अस्तित्व पर शंका प्रकट की। उनका उत्तर सुनकर इन्हें मौन रहना पड़ा, पर इन्होंने कह दिया कि ''महात्मन्! अपनी तर्क शक्ति के कारण आपने मुझे निरूत्तर तो कर दिया, किन्तु विश्वास नहीं दिलाया कि ईश्वर भी कोई शक्ति होती है।'' यह सुनकर स्वामी जी पहले हँसे फिर गम्भीर होकर उन्होंने कहा – ''तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारा विश्वास ईश्वर पर करा दूँगा। तुम्हें ईश्वर पर विश्वास तभी होगा, जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।''

बात आई गई हो गई। बरेली से आकर मुंशीराम जालन्धर में मुख्तार का कार्य करने लगे। अंग्रेजी की चाकरी में इन्हें गुलामी की गन्ध लगती थी। विक्रम सम्वत् 1941 में इन्होंने लाहौर जाकर वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने का निश्चय किया। विदाई उत्सव मनाते हुए मित्रों के साथ खूब मदिरापान किया। इसी रात्रि एक युवती को अपने मित्र के हाथों से छुड़ाकर उसके पतिव्रत धर्म की रक्षा की। उसी समय बिजली की भांति इनकी आँखों में धर्मबहिन राजरानी, पत्नी शिवदेवी की मूर्ति तथा कोपीनधारी यति दयानन्द की विशाल छवि विभूति रमाये हाथ में मोटा लट्ठ लिए आ खड़ी हुई। ऐसा लगा मानो वे कह रहे हों ''क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा?'' हृदय काँप उठा। उसी समय मदिरा से भरे गिलास और बोतल को दीवार पर पटक कर तोड़ दिया। लाहौर पहुँचने पर इनका सम्पर्क आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश से हो गया। माँस–मदिरा तथा सभी दुरित दुर्व्यसनों से इन्हें मुक्ति मिल गई। जालन्धर में वकालत करते हुए सामाजिक कार्यों में सक्रिय हो गये। आर्य समाज जालन्धर के प्रधान बना दिये गये और इन्होंने यत्र तत्र भ्रमण कर वेद प्रचार करना आरम्भ कर दिया। आवश्यकतानुसार शास्त्रार्थों के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन कर सत्यधर्म दृढ़ किया। उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' तथा अन्य पत्र प्रकाशित कर वितरित किये।

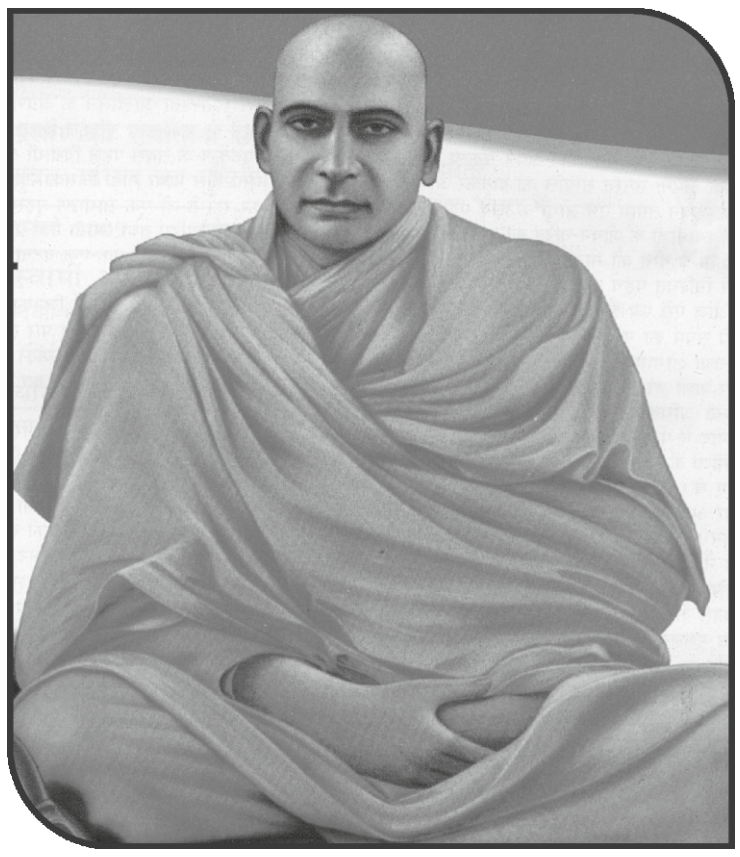

अनेक आर्य समाजों को मिलाकर बनायी गई आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को स्थायित्व प्रदान किया। भरपूर युवावस्था में धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन के बाद भी दूसरा विवाह नहीं किया। सर्वप्रथम कन्या पाठशाला जालन्धर में खोली। डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर की संचालन व्यवस्था में सहयोगी रहे, किन्तु वहाँ संस्कृत भाषा एवं आर्ष शास्त्रों की उपेक्षा को देखकर सत्यार्थप्रकाश की शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देने के लिए सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिसके लिए न केवल अपनी कोठी बेच दी, प्रत्युत वांछित धनराशि का संग्रह निश्चित अवधि से पूर्व ही कर लिया और अपने दोनों पुत्रों को भी गुरुकुल में ही रखकर पढ़ाया। दक्षिण अफ्रीका से मोहन दास गांधी भारत आये और गुरुकुल में दर्शनार्थ गए, तो सर्वप्रथम आचार्य मुंशीराम ने ही उनको 'महात्मा' कहकर 'महात्मा गाँधी' विश्व विश्रुत किया। गुरुकुल की 15 वर्ष तक सेवा करके भारत स्वातन्त्र्ययुद्ध में योगदान हेतु दिल्ली आ गये। रौलेट एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व करते समय गोलीबारी करने वाले सैनिकों के सामने अपनी छाती खोलकर हुंकार उठे ''मैं खड़ा हूँ गोली मारो'' गोरखा सैनिकों की उठी हुई संगीने नीचे झुक गईं। अब तक मुंशीराम महात्मा के सम्बोधन के बाद संन्यासी श्रद्धानन्द बन चुके थे। दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से 30 हजार मुस्लिम भाइयों को सम्बोधित करने के लिए स्वामी जी को बुलाया गया। अकालियों के न्यायपूर्ण आन्दोलन में सहायक बने और जेल यातना सहन की। इन्हें अकालतख्त पर ससम्मान उपेदश देने हेतु आमन्त्रित किया गया।

भारत माता की स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय एकता और वैदिक संस्कृति की समरसता के प्रसारार्थ स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस के आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। जलियाँवाला बाग के क्रूरतम हत्याकाण्ड के बाद पंजाब में कांग्रेस महाधिवेशन आयोजित करना भला किसके बूते की बात थी। स्वामी जी ने साहसपूर्वक न केवल स्वागताध्यक्ष के दायित्व को वहन कर इसे सफल बनाया, प्रत्युत प्रथम बार हिन्दी में स्वागत भाषण देकर नया इतिहास रचने का कीर्तिमान् स्थापित कर दिया। भारत भूमि के स्थाई कल्याण के लिए कटिबद्ध स्वामी जी देश में दलित भाईयों की दीनदशा के प्रति चिन्तातुर रहने लगे। उन्होंने इनके उद्धार के लिए प्रस्ताव कांग्रेस अधिवेशनों में रखे। इनकी इस गुहार की अनवरत उपेक्षा हुई, तो उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और दलितोद्धार सभा के माध्यम से दलितों की कठिनाइयों के निवारण का एक सफल अभियान आरम्भ किया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने न केवल उत्तर भारत में ही, अपितु दक्षिण भारत के आन्ध्र प्रदेश, विजयबाड़ा, मैसूर, चेन्नई और मुम्बई आदि की यात्रायें करके इस दलितोद्धार के अभियान को संचालित किया। स्वामी जी ने अनुभव किया कि देशोद्धार हेतु बृहत् हिन्दू समाज को संगठित किया जाना आवश्यक है। इसीलिए उन्होंने आर्य समाज के साथ–साथ हिन्दू महासभा के माध्यम से हिन्दूधर्म से अन्य मतों में चले गये इच्छुक व्यक्तियों के स्वधर्म में परावर्तन पर बल दिया। उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिले। सन् 1924 में शुद्धिसभा के द्वारा तीस हजार नव मुस्लिम मलकाने राजपूतों को गायत्री मन्त्र उच्चारण कराके उनके पुरातन वैदिक धर्म का श्रेयस उन्हें प्रदान किया था।

●

– वरेण्यम् एमाईजी भूखण्ड–45, अवन्तिका कालोनी (ए.डी.ए.), रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ.प्र.

श्रद्धानन्द सदृश बन जाओ

- प्रो. जनमेजय विद्यालंकार, एम. ए. शास्त्री

रोम-रोम में रमा हुआ था, जिनके ओ३म् नाम का राग।
नख से शिख तक पूर्ण हुआ था जिनके मातृभूमि अनुराग।।
अद्वितीय पावन था जिनका भव्य देह महिमा का धाम।
श्रद्धानन्द नाम था उनका उनको सौ-सौ बार प्रणाम।।

●●●●●●

कान धन्य थे जिनने उनका सिंहनाद सुन पाया था।
बड़भागी थे नेत्र जिन्होंने दर्शन लाभ कमाया था।।
अहो धन्य वह मस्तक जिसने उनकी चरणधूलि पाई।
स्मरण शक्ति वह धन्य न जिसने कथा पुरानी बिसराई।।2।।

●●●●●●

एक बार जो उनसे मिल ले धन्य धन्य हो जाता था।
कायरता सब छोड़ उसी क्षण महावीर बन जाता था।।
उनकी दयादृष्टि को पाकर सब निहाल हो जाते थे।
रोते-रोते आते थे हँसते-हँसते जाते थे।।3।।

●●●●●●

उनके बल से सदा सुरक्षित रहता था यह देश महान्।
उनके ही दम से चमका था शिक्षा का प्राचीन विधान।।
अगर कहीं वह जीवित होते कभी न बनता पाकिस्तान।
विश्व शिरोमणि देश हमारा कहलाता इक हिन्दुस्तान।।4।।

●●●●●●

कुछ तो सीखो त्याग तपस्या ऐ कविता पढ़ने वालो।
निर्भयता साहस कुछ सीखो भारत के रहने वालों।।
मुख से नहीं, आचरण से तुम ईश्वर पर विश्वास करो।

प्रेरक जीवन के धनी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महेश वेदालंकार

इस देश को सद्ग्रन्थों और महापुरुषों की लम्बी विरासत व परम्परा मिली। ये प्रेरक सद्ग्रन्थ तथा पुण्य आत्माएँ जीवन जगत की प्रकाश स्तम्भ हैं। ये ही भूली–भटकी मानव जाति को सन्मार्ग दिखाते हैं। इसी बलदानी परम्परा में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और देश, धर्म, संस्कृति के रक्षक उनके कार्यों व आदर्शों को संसार श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा, त्याग, सेवा, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व आकर्षक व सराहनीय था। उनकी तप, त्याग, तपस्या, सेवा, वीरता, दृढ़ता, राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य अनुकरणीय व प्रशंसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है, उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति प्रेरक व असाधारण है। उनकी देश, धर्म, जाति तथा वैदिक धर्म की सेवा स्लाघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण स्वर्णिम है। उनका संगीनों के सामने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिनमें कई बुराईयाँ, नास्तिकता, खान–पान की अपवित्रता, आचरण की मलीनता और भोग–विलास की प्रधानता थी। वे धर्म, कर्म, ईश्वर विश्वास, स्वाध्याय, सत्संग आदि से दूर रहते थे। घटना क्रम बदला। ऋषिवर देव दयानन्द का चुम्बकीय साक्षात् दर्शन, तर्क ज्ञानयुक्त श्रवण और वार्तालाप से ज्ञान चक्षु खुल गये। जीवन की धारा बदल गई। पूर्व सन्मार्ग के संस्कार जागृत हो उठे। प्रभु कृपा हुई, जीवन का रंग–ढंग ही बदल गया। पतित जीवन से प्रेरक और सन्मार्ग के जीवन की ओर चल पड़े। यह हृदय परिवर्तन से ही सम्भव हुआ। यही प्रभु की कृपा कहलाती है। परमेश्वर जिनका कल्याण चाहता है उनके दुर्गुण, दुर्व्यसन हटाकर भ्रदभाव जागृत कर देता है। आज हमारे जीवनों में अनेक दोष, बुराईयाँ, दुर्गुण, दुर्व्यसन, अहंकार, ईर्ष्या–द्वेष आदि घर किये बैठे हैं जो हमें खोखला कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी भूल व गलती है कि हम अपने दोषों, कमियों और गलतियों को देखते, मानते तथा जानते नहीं हैं। अपने को निर्दोष और दूसरों को दोषी मान एवं समझ रहे हैं। व्यक्ति का सुधार, निर्माण, उत्थान व कल्याण तभी होता है जब वह अपने दोषों, बुराईयों को महसूस करता है। मुंशीराम ने अपनी कमियों, अवगुणों को महसूस किया। छोड़ने की इच्छाशक्ति और संकल्प किया। वे महामानव श्रद्धानन्द बन गये। सीखने, सम्भलने, सुधरने तथा श्रेष्ठ बनने का मुंशीराम से बढ़कर प्रेरक उदाहरण कहीं न मिलेगा। मुंशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं? तो हम क्यों नहीं श्रेष्ठ, महान एवं प्रेरक बन सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन हमें बहुत कुछ कह रहा है। बात कहने की नहीं करने की है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' उनकी आत्मकथा सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणाप्रद है।

स्वामी श्रद्धानन्द वाक्शूर नहीं है, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का कथनी, करनी का पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने व बढ़ने की शिक्षा एवं प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी श्रद्धा, आस्था, विश्वास, व्रती संकल्प, कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है। जो इतनी गिरावट से इतनी ऊँचाई पर चढ़ा हो कि जिसने जीवन की सर्वोच्च पदवी संन्यासी पद पाया हो। जिसने स्वर्णिम इतिहास बनाया हो और इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो, जिसने घनेघोर जंगल में गुरुकुल का दिया जलाया हो, जिसने शुद्धि आन्दोलन का चक्र चलाया हो और अन्त में शुद्धि मिशन के लिए बलिदानी बन गये जिसने दुर्दांत डाकुओं को भी तप, त्याग, साहस, वीरता आदि से अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सान्निध्य में बैठाने का साहस रखता हो वह इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द जी के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषिवर ने जो वाणी, लेखनी और आर्य समाज के माध्यम से जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श तथा वैदिक चिन्तन दिया, उन्हें इस महापुरुष ने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियात्मक साकार रूप दिया। वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरूद्धारक थे। उनका जीवन कठिनाईयों, संघर्षों, चुनौतियों और विरोधों में निकला। किन्तु उन्होंने कभी हार नहीं मानी। चरैवेति–चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया। गुरुकुल

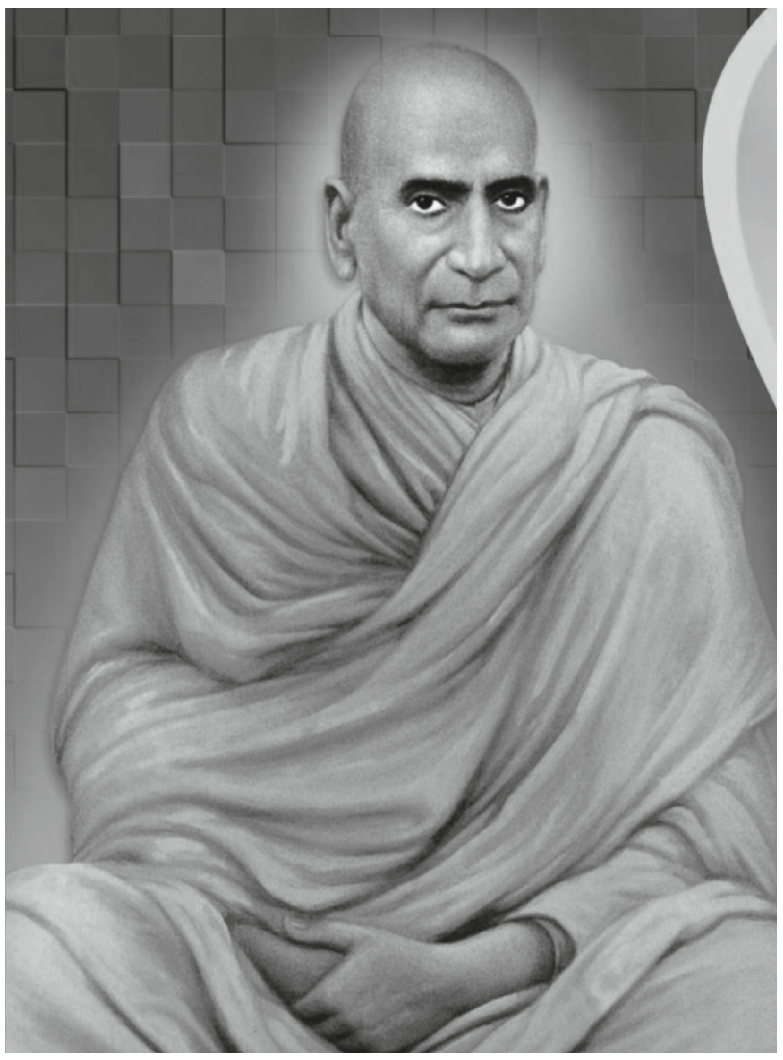

कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक है उनके जीवन की सम्पूर्ण पूंजी है। किन्तु आर्य समाज का गौरव वह स्मारक आज ढह रहा है। विकृत और मूल से हट रहा है। हम सब बेखबर हैं।

इतिहास साक्षी है – 'भूतो न भावी'। स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महापुरुष थे जिन्हें जामा मस्जिद से वेद मन्त्र बोलकर हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना चलाओ मेरे सीने पर गोलियाँ? स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त साहसी ही कह सकता था। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। यही शुद्धि चक्र अन्त में उनके बलिदान का कारण बना। स्वामी जी में अपार तप, त्याग, सेवा, साहस, वीरता, बलिदान आदि के भाव कूट–कूट कर भरे थे। उनकी शिक्षा, धर्म, संस्कृति, शुद्धि, राजनीति, वैदिक धर्म प्रचार आदि के क्षेत्र में अनूठे वीर पुरुष के रूप में पहचान थी। उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियाँ और उद्गार देश–विदेश से आये थे उससे उनके सहज ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चलता है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी महान स्वतंत्रता सेनानी, किसी ने पथ–प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने गुरुकुल शिक्षा का पुनरूद्धारक, किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार, किसी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का पक्षधर आदि अनेक विशेषणों और विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था। उनकी स्मृति और कार्यों को अजर–अमर बनाये रखने के लिए प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है। जलसे, जलूस, लंगर, फोटो–माला, स्वागत, नारों आदि में सिमट कर रह जाता है। कहीं वैदिक मिशनरी स्प्रिट रचनात्मक, निर्माणात्मक, प्रभावपूर्ण और लोगों को जोड़ने वाली चेतना नजर नहीं आ रही है। सर्वत्र निराशा, तटस्थता, स्थिरता और किं कर्त्तव्य विमूढ़ता छा रही है जबकि आज के वातावरण व हालात में जीवन जगत को आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है। वैदिक धर्म ही संसार को सीधा, सच्चा व सरल मार्ग दिखा सकता है। आर्य समाज की पीड़ा है कि तेजी से संन्यासी, विद्वान, वक्ता, धर्माचार्य, भजनोपदेशक, प्रचारक, समर्पित सेवा भावी कार्यकर्ता, सदस्य आदि घट रहे हैं और जा रहे हैं। नये बन नहीं रहे हैं। इस दिशा में बनाने की भावना व ईमानदारी से योजना कार्यक्रम, संकल्प, प्रकल्प भी नहीं हो रहे हैं। केवल प्रस्ताव, मीटिंगों, वादों, भाषणों आदि से बात नहीं बनेगी। सच्चाई एवं ईमानदारी से आर्य संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुलों, समाजों आदि को आत्मशुद्धि, आत्मचिन्तन, चुनाव प्रक्रिया, पदों की आयु और समय सीमा आदि का पुनर्मूल्यांकन करने की तुरन्त जरूरत है। सभी जगह जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह प्रेरक अनुभव सिद्ध संदेश कह रहा है कि आर्य समाज को सेवकों की जरूरत है, नेताओं की नहीं। आज आर्य समाज की दुःखद त्रासदी है कि सभी नेता बनना चाह रहे हैं सेवक कोई नहीं बनना चाहता है। सब ऊपर बैठना चाहते हैं नीचे कोई नहीं रहना व बैठना चाहता है। झगड़े, पद–प्रतिष्ठा पैसे के लिए हो रहे हैं। किसी को दयानन्द, वेद प्रचार, आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की बेचैनी, दर्द और झटपटाहट नहीं सता रही है। सब जगह मूल में भूल हो रही है। केवल नारों, जयकारों तथा झण्डों से बात नहीं बनेगी। यदि ऋषि और आर्य समाज को अजर–अमर रखना और आगे बढ़ना है तो नियम, सिद्धान्तों, विचारों व संगठन को अविलम्ब एकता, अनुशासन में लाना तथा झगड़ों विवादों से बचाना होगा। विवादों से बात नहीं संवादों से बात बनेगी। सर्वत्र लम्बे समय से एकाधिकार की भावना, पदों को न छोड़ने का हठ, अहंकार और दुराग्रह आर्य समाज को खोखला, कमजोर व संकुचित कर रहा है।

आर्यों! उठो, जागो अपने स्वरूप को समझो! श्रद्धानन्द जी का बलिदान हमें पुकार रहा है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए जीवन बलिदान कर दिया। क्या हमें ऋषि मिशन व आर्य समाज की एकता, संगठन व उन्नति के लिए स्वार्थ, अहंकार और पदों को नहीं छोड़ सकते हैं? पदों से कदों को ऊँचा करो। कहाँ व्यर्थ की बातों, ईर्ष्या, द्वेष तथा विवादों में उलझ रहे हैं। ऋषि की आत्मा दुःखी होकर हमें क्या कह रही होगी। क्या हमने इसीलिए आर्य समाज बनाया था, यह बलिदान पर्व हमें बहुत कुछ कह रहा है। आईये! विचारें चिन्तन करें।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द 12 दिसम्बर, 2021 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किसान को राजाओं का राजा कहा है

– स्वामी आर्यवेश

देश में शराबबंदी की राष्ट्रीय नीति लागू करे केंद्र सरकार

– स्वामी रामवेश

देश की आजादी के आंदोलन में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा है

– स्वामी आदित्यवेश

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी व पं. राम प्रसाद बिस्मिल के बलिदान की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 12 दिसम्बर, 2021 को महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705, अर्बन स्टेट जीन्द के महर्षि दयानन्द पार्क में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। 12 दिसम्बर, 2021 को विशाल आर्य महासम्मेलन प्रातः यज्ञ के उपरान्त प्रारम्भ हुआ तथा सायं 4 बजे तक चलता रहा। महासम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त मुख्य रूप श्री दलबीर आर्य मुकलान, श्री देवेंद्र सैनी हिसार, श्री जगदीश सींवर, सिरसा, श्री सत्यवीर कैथल, श्री इंद्रजीत नरवाना, श्री ऋषिराज शास्त्री रोहतक, श्री आजाद सिंह सोनीपत, श्री अजित सिंह झज्जर, श्री अशोक आर्य कुरुक्षेत्र, चौ. सूरजमल जुलानी, श्री वेद प्रकाश आर्य भिवानी, बहन पूनम आर्या, प्रिं. जगफूल ढिल्लों, श्री बलजीत हुड्डा ने अपने विचार रखे तथा श्री सहदेव बेधड़क, श्री कुलदीप आर्य व श्री सुनील शास्त्री आदि ने भजनों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द में अपना अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि एक साल पहले इसी दयानन्द पार्क से आर्य समाज ने किसान आंदोलन का समर्थन किया था। आज उसी ऐतिहासिक आन्दोलन की सफलता ने देश–दुनिया में किसानों के सम्मान को बढ़ाया है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में किसान को राजाओं का राजा कहा है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही किसान व मजदूरों की आवाज उठाता रहा है। लाला लाजपत राय व श्री अजित सिंह द्वारा चलाया गया पगड़ी संभाल आन्दोलन से लेकर, उसके बाद के बड़े नेताओं ने किसानों की आवाज उठाई है, उसमें चाहे चौधरी छोटूराम की बात हो या चौधरी चरण सिंह की या उनके बाद 1973 में स्वामी इंद्रवेश जी की 21 दिन की भूख हड़ताल हो। किसानों की आवाज उठाने में आर्य समाज ने सदैव अपनी अहम भूमिका निभाई है। इसलिए एक वर्ष पूर्व इस आन्दोलन का समर्थन इसी जींद की धरती से किया गया था। यह विश्व का पहला ऐसा किसान आन्दोलन था जो इतना लम्बा व शांति पूर्वक चला। स्वामी आर्यवेश जी ने देश के विभिन्न किसान संगठनों द्वारा चलाये गए शांतिपूर्ण व सफल आंदोलन के लिए बधाई दी तथा 378 दिन चले किसान आन्दोलन के दौरान अपनी जान गवानें वाले किसानों को महासम्मेलन में आर्य समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की

कार्यक्रम के संचालक व नशा बंदी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि देश में राष्ट्रीय स्तर पर नशाखोरी पर प्रतिबन्ध लगे और शराब के उत्पादन व विक्रय पर पूर्ण रोक लगाई जाये। इस अवसर पर केन्द्र सरकार से देश में पूर्ण नशाबन्दी की माँग की गइ। उन्होंने कहा कि नशे के कारण आज देश का युवा बर्बाद हो रहा है तथा गरीब, किसान और मजदूर लुट रहे हैं। सरकारें शराब के ठेके खुलवाकर

गरीब जनता को लुटवा रही है। उन्होंने कहा कि नशे के कारण जब देश का मेहनतकश मजदूर, किसान व युवा बर्बाद हो जायेगा तो देश के विकास की अवधारणा भी पूरी तरह से निष्फल एवं निरर्थक हो जायेगी।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी के आंदोलन में आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के सिपाहियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। गुरु विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, चाचा अजीत सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की प्रेरणा से लाखों लोगों ने अपने आपको आजादी की बलिवेदी पर आहूत कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

इण्ड्स स्कूल के निदेशक श्री सुभाष श्योराण ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार देने की आवश्यकता है। बच्चे संस्कारित होंगे तो देश का सही मायने में विकास होगा।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अनाचार, कन्या भ्रूण हत्या एवं बलात्कार की घटनाएँ सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। अतः इन्हें समाप्त करने के लिए समाज के जागरूक लोगों को आगे आना चाहिए और इन बुराईयों को मिटाने के लिए अभियान चलाना चाहिए।

हाईकोर्ट के वकील व आर्य नेता श्री रणधीर रेढू ने कहा कि धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड तथा अन्धविश्वास के कारण भी जनता का शोषण किया जाता है और अनेक पाखण्डी बाबा अपने को भगवान बताकर लोगों की भावनाओं का दोहन कर रहे हैं। इससे धर्म का सच्चा स्वरूप विकृत हो रहा है।

प्रान्तीय महासम्मेलन के दौरान युवा सम्मेलन, नशाखोरी व कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किये गये। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सर्वश्री वीरेंद्र लाठर, अजीतपाल, डॉ राजपाल आर्य, कर्ण सिंह रेढू, जगदीश आर्य, दलबीर आर्य, केवल सिंह, नफेसिंह, सूरजमल पहलवान, धर्मबीर ढिल्लो आदि उपस्थित रहे।

प्रान्तीय महासम्मेलन में भारत के तीनों सेनाओं के प्रमुख श्री विपीन रावत तथा उनके साथ अन्य सेना के जवानों के निधन पर गहरा शोक प्रस्ताव पारित हुआ। पूरे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का प्रस्ताव, सोशल मीडिया के माध्यम से परोसी जा रही अश्लील वीडियो तथा सामग्री के खिलाफ प्रस्ताव, शिक्षा में संस्कार, नैतिक मूल्य व संस्कृत को अनिवार्य करने के पक्ष में प्रस्ताव तथा गौरक्षा हेतु गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किये जाने तथा गौवध एवं गोमांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव पास किया गया।

कार्यक्रम के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के 10 कर्मठ कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह देकर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

– जगतराम आर्य

19 दिसम्बर, 1927 ई., सोमवार प्रातःकाल छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठाः

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।''

तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की- ''मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।''

इसी प्रकार 16 दिसम्बर, 1927 को उन्होंने लिखाः-

''हे ईश! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।''

यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही वे टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, शक्तिदायक है। युग आएंगे और चले जाएंगे, पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रगों में शक्ति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 ई. को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहां हुआ था। मुरलीधर ऊँचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बड़े साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का संचालन करते थे।

बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलवी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उद्दंड थे। न स्वयं पढ़ते थे न दूसरे लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उद्दंडता बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था।

पर संयोग की बात, एक दिन शाहजहांपुर में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन की कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाजी नेताओं के उपदेश सुनने लगे। आर्य समाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के चरित्र पढ़ने लगे, देश प्रेम से भरी हुई कविताओं का

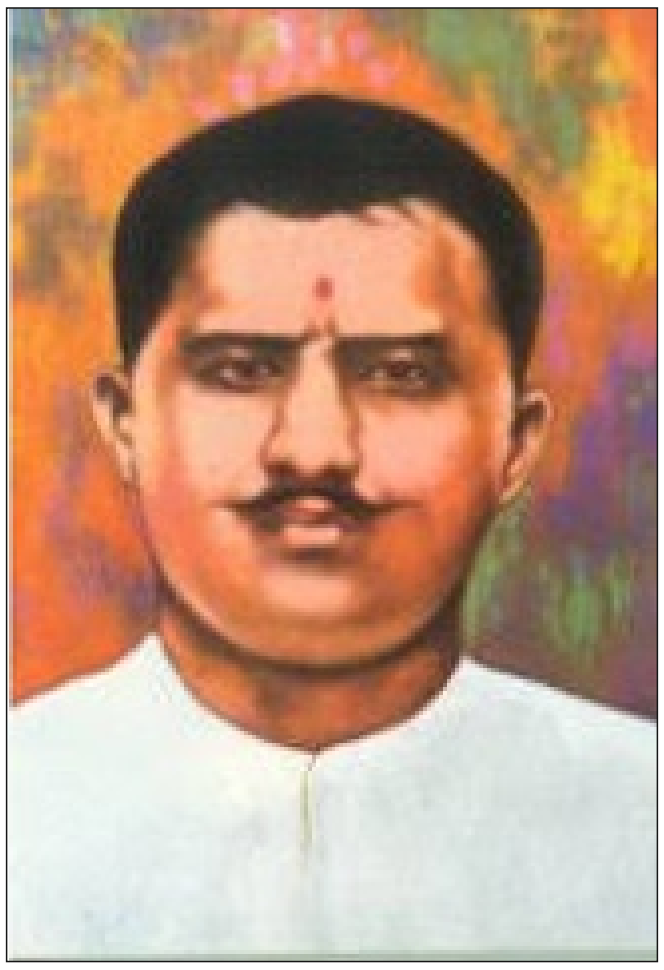

सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था।

बिस्मिल जी को ऊँची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होंने सामान्य रूप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी। उन्होंने एन्ट्रेन्स की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेन्स तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होंने स्वतंत्र रूप से पढ़कर बाद में उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताएं बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थीं। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की है। उर्द और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बांग्ला और हिन्दी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा। जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रूप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति का कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई। परसेवा से और भी अधिक आगे बढ़कर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगा। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है। फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे।

इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेंदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए। बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किया। वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के सम्बन्ध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियां कही जाती हैं।

बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा भी दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होंने 1925 ई. में 9 अगस्त को काकोरी में ट्रेन डकैती करके अपने अद्भुत साहस का परिचय दिया था।

काकोरी लखनऊ के पास एक स्टेशन है। 1925 ई. की 9 अगस्त का दिन था। संध्या के लगभग 8 बज रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी।

यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारियां की जाने लगीं। एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी 25 दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए। माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखे डबडबा गई। अश्रु बूंदे रह-रहकर आंखों से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं- ''मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आसूं बहाकर अब अन्तिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो! इस कायरता से क्या होगा? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है।''

बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोछते हुए बोल उठे- ''मां, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकीं। मां, मैं मृत्यु से भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है, उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रुबूंदें निकल पड़ी। विश्वास रखो मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूं, पूर्णरूप से संतुष्ट हूँ।''

गोरखपुर जेल में 1927 ई. की 19 दिसम्बर का प्रातः काल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होंने शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की, हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होंने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की- ''अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो!''

!!ओ३म्!!
35 वां वेद पारायण यज्ञ एवं सत्संग समारोह
(यजुर्वेद पारायण यज्ञ)
(दिनांक 14 जनवरी से 16 जनवरी 2022)

श्रीमान्

परमात्मा की महती कृपा से पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राज.) में दिनांक 14 जनवरी से 16 जनवरी 2022 को यजुर्वेद पारायण यज्ञ व सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली), स्वामी आर्यवेशजी (दिल्ली) स्वामी आदित्यवेशजी (रोहतक), स्वामी व्रतानन्दजी (आमसेना), आ. योगेंद्रजी याज्ञिक (होशंगाबाद), आ.दयासागरजी (थांदला), आ.जीववर्धनजी (बांसवाड़ा), आ.धनन्जयजी (देहरादून), आ.पुष्पाजी (आमसेना), पं.योगेशदत्तजी आर्य, पं.नरेश दत्तजी, पं.भीष्म कुमारजी आर्य (बिजनौर) आदि महानुभाव पधार रहे है। जिनके भजन एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त करने हेतु अवश्य पधारें।

विशेष : इस अवसर पर भव्य यज्ञशाला का राज्यपाल (सिक्कीम) द्वारा उद्घाटन होगा। इस शुभ अवसर पर स्वामी सुमेधानन्दजी, श्री सुरेशजी आर्य (अहमदाबाद), श्री दीनदयालजी (कोलकाता), श्री प्रकाशजी आर्य (महू), श्री विट्ठलराव जी आर्य (हैदराबाद), श्री अरूणजी अबरोल (मुम्बई), श्री विजयजी शर्मा (भीलवाड़ा) की विशेष उपस्थिति में होगा।

-कार्यक्रम-
दि. 14 एवं 15 जनवरी 2022
प्रातः 7:30 से 10:30 बजे व सायं 4 से 6 बजे -यज्ञ एवं भजन
विशेष : भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन - प्रातः 11 बजे
रात्रि 7 से 9:30 बजे तक भजन व प्रवचन
दि. 16 जनवरी 2022 रविवार
प्रातः 7:30 से 10:30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति व प्रवचन
प्रातः 10:30 बजे धन्यवाद एवं शांतिपाठ

-कार्यक्रम स्थल-
पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल प्रताप नगर चित्तौड़गढ़, राजस्थान

-आयोजक-
डॉ.सोमदेव शास्त्री 9869668130
प्रणव शास्त्री 9920423095
अनिरूद्ध शास्त्री 7302572443

-प्रबंधक-
संचालन समिति एवं समस्त पदाधिकारी
पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राज.)

आजादी के दीवाने अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह

— कु. भावना

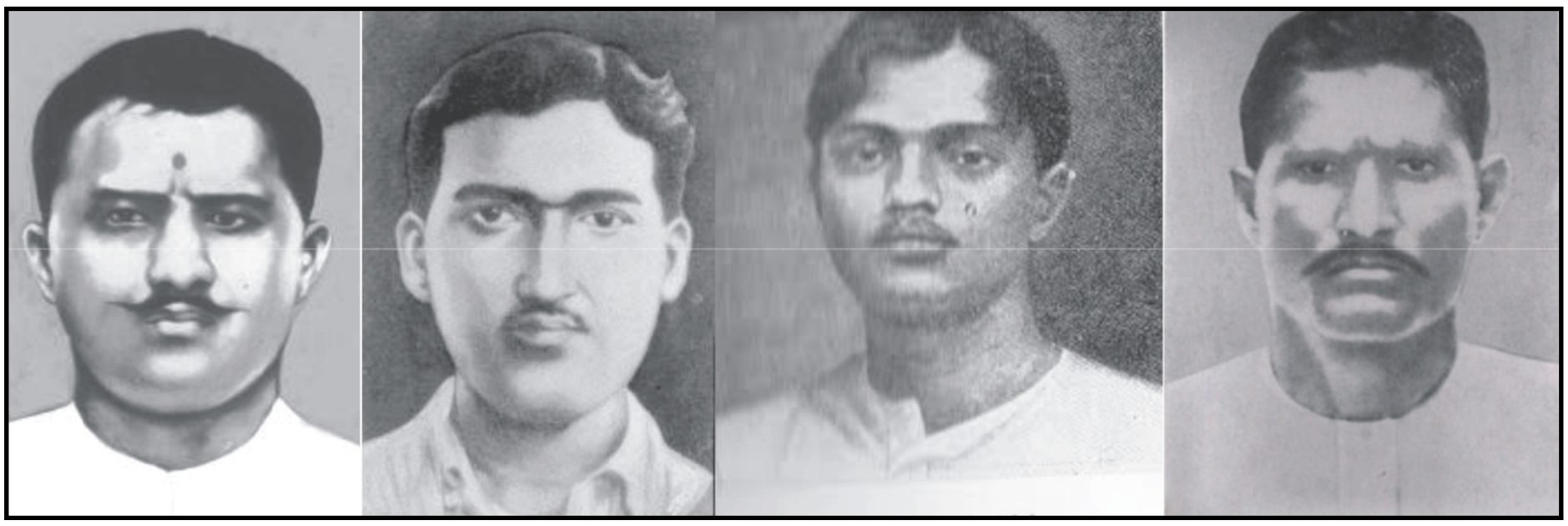

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।'' – राम प्रसाद बिस्मिल

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी पं. मुरलीधर तिवारी के यहाँ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी विक्रमी सम्वत् १८८४ को राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म हुआ। वे कचहरी में स्टाम्प बेचकर जीवन यापन करते थे। जब राम प्रसाद चौदह वर्ष के थे, तब उन्हें घर में चोरी करने, सिगरेट और भांग पीने तथा श्रृंगाररस पूर्ण उपन्यास पढ़ने की बुरी आदत पड़ गई। एक दिन नशे की हालत में पकड़े जाने से बुरी आदतें दूर हुई। परन्तु सिगरेट बहुत ज्यादा पीते थे। सहपाठी श्री सुशीलचन्द्र सेन के विशेष प्रयत्नों से यह बीमारी भी छूटी। समय बदला, रामप्रसाद बिस्मिल के धार्मिक संस्कार जागृत हुए। एक सज्जन की देखादेखी व्यायाम करने लगे। ब्रह्मचर्य पालन व नियमित व्यायाम करने से उनका शरीर बल्ष्ठि व बुद्धि तेज हो गई। मुंशी इन्द्रजीत की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सम्पर्क में आए जो समाज सुधार व स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रणी संस्था थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' के अध्ययन से तो उनका जीवन ही बदल गया। पर्यावरण शुद्धि व जनकल्याण के लिए वे 'यज्ञ' करते तथा विद्वानों की सेवा करते।

उन्होंने सर्वप्रथम शाहजहाँपुर में 'आर्यकुमार सभा' की स्थापना की। इसमें बच्चों व युवकों को देशभक्ति और समाज सेवा की प्रेरणा दी जाती थी। 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत युवकों को आत्मरक्षा व शस्त्र–शास्त्र का अभ्यास कराया जाता था। इसका साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक शुक्रवार होता था। इसमें वाद–विवाद, भाषण व धार्मिक पुस्तकों का पठन–पाठन हुआ करता था। उन्होंने 'आर्य कुमार सभा' के अन्तर्गत अश्फ़ाक उल्ला खाँ, ठाकुर रोशन सिंह आदि अनेक देशभक्त नौजवान तैयार किये। भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुनकर उनके शरीर में आग लग गई। उन्होंने विचारा कि ''अंग्रेज बड़े पापी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, मैं इसका बदला अवश्य लूँगा।'' जीवन भर अंग्रेजों के राज्य को विध्वंस करता रहूँगा। इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर चुकने के पश्चात् वे सुप्रसिद्ध देशभक्त संन्यासी स्वामी सोमदेव जी से मिले, जो अपने भाषणों में जन–जागृति व आजादी के महान कार्य में जुटे हुए थे। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरूद्ध उन्होंने क्रान्तिकारी युवकों का संगठन बनाया। इटावा के शिक्षक पं. गेन्दालाल दीक्षित उनके 'गुरु' थे। उनसे वे बन्दूक, पिस्तौल आदि शस्त्र चलाने सीखते। रामप्रसाद बिस्मिल ने अमेरिका को आजादी कैसे मिली, स्वदेशी रंग, क्रान्तिकारी जीवन, मन की लहर आदि पुस्तकें प्रकाशित कर क्रान्तिकारी दल के लिए धन की व्यवस्था की। किन्तु यह पर्याप्त न थी।

अंग्रेज सरकार भारतीयों पर हर तरह के जुल्म करती थी। अतः क्रान्तिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी में सरकारी खजाने को लूटकर दल की गतिविधियाँ तेज की जाये। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। अन्ततोगत्वा काकोरी के करीब रेलगाड़ी खड़ी करके सरकारी खजाना रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह आदि मात्र दस क्रान्तिकारियों ने लूट लिया। इससे दस हजार रुपये उनके हाथ लगे। कार्यकर्ताओं को इससे बड़ा उत्साह मिला। यह धन स्वाधीनता संग्राम में व्यय होने लगा।

काकोरी डकैती के बाद पुलिस बहुत सचेत हो गई। दल के सदस्य बनवारी लाल के सरकारी गवाह बन जाने से क्रान्तिकारी संगठन को गहरा धक्का लगा। राजद्रोहात्मक साहित्य पकड़ा गया। काकोरी काण्ड में लिप्त सभी सदस्य पकड़े गये। केवल चन्द्रशेखर 'आजाद' ही थे, जो बन्दी न बनाये जा सके। क्रान्तिकारियों को अमानवीय यातनाएँ दी जाने लगी। अशफ़ाक उल्ला खाँ को गहरी पीड़ा पहुँचाई गई। दल के सदस्य राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी कलकत्ता से गिरफ़्तार किये गये। अंग्रेजों के जुल्मों का क्या कहना?किसी कवि ने कहा है –

देश हित वार दीं, अनेक ही जवानियाँ।
जिनके खून से लिखी, स्वदेश की कहानियाँ।।

अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल को बड़ा भाई मानते थे। अतः इसी लगाव के कारण ब्रिटिश सरकार उन्हें बिस्मिल का सहकारी मानती थी। अशफ़ाक को हर प्रकार से पीड़ा पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बहकाने के लिए मुसलमान पुलिस अफसर को भेजा। पर आजादी का दीवाना अशफ़ाक उल्ला खाँ तो सच्चा देशभक्त था, अपने कर्तव्य से विमुख न हुआ। वीराग्रणी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह को जज ने फाँसी की सज़ा व शचीन्द्र बख्शी, केशव चक्रवर्ती, मुकन्दी लाल, मन्मथ लाल गुप्त को कालेपानी की कठोर यातनाएँ दी गई। १६ दिसम्बर, १६२७ को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी पर लटकाने से पूर्व उनकी 'अन्तिम इच्छा' पूछी गई, जिसे सुनकर कर्मवीर पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने उच्च स्वर से कहा – 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो' यह मेरी अन्तिम कामनाहै। वेद के पवित्र मन्त्र व जोशीले गीत गाते हुए बिस्मिल और उनके साथियों ने हंसते हुए फाँसी के फन्दे चूम लिये और सदा के लिए अमर हो गए।

इन क्रान्तिकारियों ने दशवासियों से अन्तिम प्रार्थना करते हुए कहा था कि वे सुशिक्षित बनें तथा जो कुछ करें, सब मिलकर देश की भलाई के लिए करें। इसी में सबका भला है।

मरते बिस्मिल, रोशन लाहिड़ी, अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा इनके खून की धार से।।

'अशफ़ाक मेरा सच्चा मित्र एक संस्मरण' नाम शीर्षक से पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा कि –

''मैंने तुमने एक थाली में भोजन किया। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू–मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय कम्प दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बारम्बार 'राम', 'आय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बन्धुओं को आश्चर्य था कि 'राम–राम' की रट थी। उस समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद जानते थे। तुरन्त मुझे बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई, तब सब लोग 'राम–राम' के भेद समझे।''

बिस्मिल ने जेल में फाँसी से ३ दिन पूर्व दिल को हिला देने वाली आत्मकथा में यह लिखा है – ''अशफ़ाक! तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की इच्छा थी। तुम मेरे छोटे भाई जैसे हो गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा?तुम एक सच्चे मुसलमान थे और और सच्चे देशभक्त भी। तुमने हमेशा चाहा कि मुसलमानों की खुदा अक्ल दे कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर हिन्दुस्तान की भलाई करें..... मैंने, अशफ़ाक! अपना तन–मन–धन सब मातृसेवा में अर्पण करके तुम जैसे अपने प्यारे मित्र को भी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।''

एक उद्‌बोधन
आर्य युवकों! नेता नहीं, सेवक बनो

—स्वामी श्रद्धानन्द

7 अक्टूबर 1913 को दिल्ली में अखिल भारतीय कुमार सम्मेलन का चौथा अधिवेशन हुआ था जिसकी अध्यक्षता महात्मा मुंशीराम जी ने की थी। इस अधिवेशन में महात्मा जी ने आर्य युवकों को संबोधित करते हुए जो ओजस्वी व्याख्यान दिया था वह ना केवल आर्य युवकों के लिए वरन संपूर्ण युवक समुदाय एवं देशवासियों के लिए आज भी उतना ही उद्‌बोधक एवं प्रेरक है जितना कि उस समय था। अतः उस व्याख्यान के कुछ अंश यहां प्रस्तुत है।

जाति की भविष्यत् आशाओं! आज मुझे आपने जो सेवा का अवसर दिया है, उसके लिए आपका अत्यन्त धन्यवाद करता हूं। एक कवि के अनुसार मुझे कहना पड़ता है – 'न हि विद्या न हि बाहु न हि खर्चन को दाम' अर्थात् न मुझमें विद्या है, न बाहु बल है, न धन बल है। तब भी आपने मुझे सभापति क्यों बनाया है? आशाओं से भरे नवयुवकों के समाज में एक नवयुवक सभापति अधिक अनुकूल होता। इस समय मुझे 25 वर्ष की पुरानी एक घटना याद आती है। 25 वर्ष हुए मैंने सद्धर्म प्रचारक निकाला था। उस समय मेरी आयु 32 वर्ष की थी। उस समय जो लोग मुझे मिलने आते थे वह आश्चर्यचकित होते थे। वे कहा करते थे कि आपके लेखों को पढ़कर हम आपको वृद्ध समझते थे। परंतु आप अभी नौजवान हैं। आज मेरे बाल श्वेत हो गए हैं, तथापि आर्य समाज के वृद्ध सेवकों में, काम करते हुए नेताओं में, नवयुवकों में नवयुवक हृदय से अधिक मैं अपने हृदय को नवयुवक पाता हूं। चाहे आप इसे अभिमान समझें, पर मैं इस एक अभिमान का दोष अपने सिर पर लेने को तैयार हूं। मुझे हर्ष है कि युवक सम्मेलन का सभापति बनाकर आपने मेरे इसी गुण पर ठप्पा लगा दिया है। दूसरा कारण मुझे यह प्रतीत होता है कि मैंने पिछले 12 वर्षों में 6 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के युवकों के हृदयों में उतराव चढ़ाव देखे हैं।

आपने जो काम मुझे सौंपा है वह बड़ा कठिन है। बूढ़े अनुभवियों के सामने बात करना सुलभ है, परंतु युवकों को मार्ग दिखाना बड़ा कठिन है। भूल होने पर बूढ़े अनुभवी अपने अनुभव से ठोकरों से बच सकते हैं और अपने पथ रक्षक को भी रास्ता दिखा सकते हैं। परंतु जहां उत्साह के साथ हृदय की सरलता मिली हो, वहां मार्गदर्शक की उत्तरदायिता बहुत बढ़ जाती है मार्ग दिखलाने में यदि एक भी भूल हो गई यदि उनमें एक भी दाग लग गया तो बड़ी हानि हो सकती है। परंतु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी सेवा सच्चे दिल से करूंगा।

आप पूछ सकते हैं कि मैं आपको आज क्या संदेश देने आया हूं? मैं आपको क्या संदेश दे सकता हूं, हां मेरे हृदय में जो भाव हैं उन्हें मैं आपके सम्मुख रखना चाहता हूं। जिस ओर आशाएं होती है, उसी ओर हृदय का स्रोत बढ़ता है। बूढ़े अपना काम कर चुके अब आप ही हमारी भविष्यत् आशाएं हैं। एक बार जर्मनी का एक सम्राट अपने मंत्री के साथ घूमने जा रहा था। सम्राट ने एक बालक को टोपी उतार कर सलाम किया। वजीर के पूछने पर सम्राट ने कहा कि तुझे सलाम क्या करूं, तूने जो

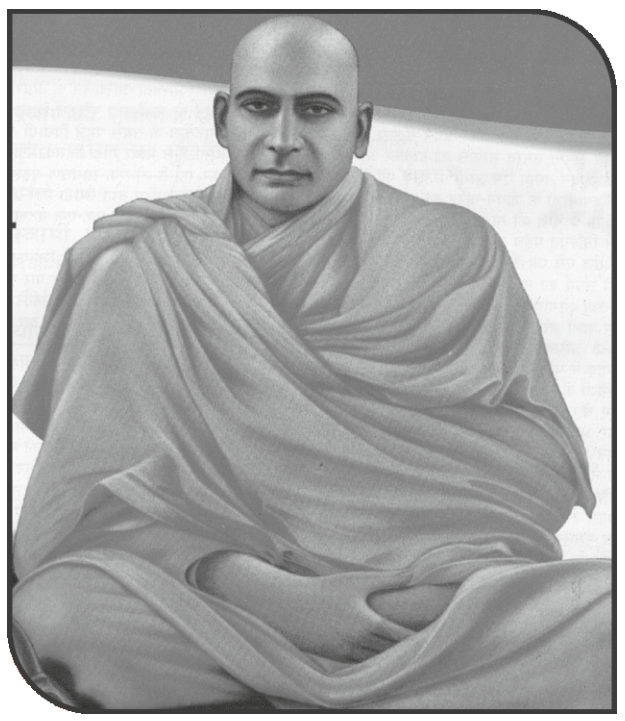

कुछ बनना था सो बन चुका। तू मेरे वजीर होने से और कुछ अधिक नहीं हो सकता। इस बालक में न जाने क्या क्या भरा है इसलिए मैंने इसे सलाम किया है। कौन जानता था कि कार्सिका की गली में खेलने वाला एक बालक सारे देश के सम्राटों का अधिपति होगा और संसार को हिला देगा। कौन कह सकता है कि आपके अंदर कौन सी शक्तियां विलीन पड़ी हैं अब हमारी आशाओं के केंद्र आप ही हैं।

किसी काम को छोटा न समझे

सबसे पहला मेरा यह निवेदन है कि नवयुवकों को कोई भी काम छोटा न समझना चाहिए। शिखर पर पहुंचने के लिए पहली सीढ़ी पर चढ़ना जरूरी है। एक बार अमेरिका के उम्मीदवार प्रधान की ओर इशारा करके एक अमेरिकन ने ताने के तौर पर कहा था तुम्हारे नाम वाला एक लड़का मेरे बूट सिया करता था क्या तुम्हारा उसके साथ कोई संबंध है। उम्मीदवार प्रधान ने अभिमान से कहा हां महाराज मैं ही वह लड़का हूं। जूते गांठने के साथ मैं बूट पालिश भी किया करता था। परंतु जाकर पूछो, जिसने मुझसे एक बार जूता गंठवाया, उसे दूसरी जगह जाने की आवश्यकता न पड़ी। महाशय, जिस इमानदारी से मैं जूते गांठा करता था उसी इमानदारी से आपके देश का राज्य करूंगा। प्यारे युवकों! हमारे देश को इस समय ऐसे कार्यकर्ताओं की जरूरत है जो छोटे से छोटे काम करने के लिए तैयार हों। और मेरा विश्वास है कि वही कार्यकर्ता बड़े काम कर सकेंगे।

दूसरा संदेशा जो मैं आप तक पहुंचाना चाहता हूं वह उपनिषदों के शब्दों में नहीं पहुंचाया जा सकता कई महानुभावों का मत है कि उपनिषदें इन लड़कों के हाथ में न देनी चाहिए उनकी प्रतिष्ठा करते हुए भी मुझे उनसे मतभेद प्रकट करना पड़ता है मेरी सम्मति में उपनिषदें लड़कों के लिए बड़ा लाभदायक स्वाध्याय हैं। कई लोग योग को भी लड़कों के लिए खतरनाक समझते हैं। मैं कहता हूं कि यदि माता के गले से लिपटना खतरनाक है तो योग भी खतरनाक है। युवावस्था में ही धर्मशील बनो, कौन जानता है कि इसी समय मृत्यु हो जाए। बालक वृद्ध युवा सबको इसी समय धर्म में लग जाना चाहिए। मुझे निश्चय है कि आर्य युवक केवल रोटी के लिए नहीं पढ़ रहे हैं मैं समझता हूं कि वे अपने हृदय के अंधकार को दूर करने के लिए पढ़ रहे हैं। अशान्तावस्था शांतस्वरूप के दर्शन के बिना कभी दूर नहीं हो सकती। मैं चाहता हूं कि उपनिषद का निम्नलिखित वाक्य प्रत्येक युवक के हृदय पर अंकित हो –

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा।
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।।

यह आत्मा सत्य से मिलता है, सत्य तप से मिलता है सम्यक ज्ञान के बिना कठिन और ब्रह्मचर्य के बिना सम्यक ज्ञान असंभव है। ब्रह्मचर्य सब धर्मों का मूल है इसलिए प्यारे युवकों उस ब्रह्मचर्य का पालन यत्न से करो।

सेवक बनने का यत्न करो

अंत में मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि मैं उपदेश नहीं देता, क्योंकि मैं उपदेश देने की योग्य नहीं हूं, हम वृद्ध आपको किस मुंह से उपदेश दें, बूढ़ों का यह कहना था कि वे आर्य धर्म रूपी फुलवारी की रक्षा के लिए कांटे बन जाते और शत्रुओं से इसकी रक्षा करते। परंतु कहते शोक होता है कि हमने कांटे बनकर रक्षा करने की जगह एक दूसरे को चुभना आरंभ कर दिया। नवयुवकों, हम अपने कर्तव्यों से च्युत हुए हैं, तुम इस फुलवाड़ी के ऐसे फूल बनो जिसकी महक से सारी फुलवाड़ी महक जावे। मत देखो कि मुंशीराम या तुलसीराम क्या करता है। सेवक बनने का यत्न करो, क्योंकि लीडरों की अपेक्षा आर्य जाति को सेवकों की अधिक आवश्यकता है। जब कभी आपका पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान का स्मरण कर लिया करो। लंका की विजय करके महाराजा रामचंद्र अयोध्या लौटे। राजगद्दी के मिलने के पीछे विभीषण, अंगद आदि सभी विदा होने लगे। उस समय माता सीता ने सभी को कुछ पुरस्कार दिया। सीता का हनुमान के साथ सबसे अधिक प्रेम था। माता ने अपना मोतियों का बहुमूल्य हार हनुमान को दिया। हनुमान ने हार लेकर एक–एक मोती को तोड़ना आरंभ किया। सीता के पूछने पर हनुमान ने कहा – 'माता, मैं देखता था कि इन मोतियों के अंदर राम का भी नाम है या नहीं, राम के नाम के बिना मैं इन मोतियों का क्या करूं?' नवयुवकों! मैं पूछता हूँ, क्या तुममें से कोई भी दयानन्द रूपी राम का पायक हनुमान बनने का यत्न न करेगा, महावीर के बिना दयानंद का काम अधूरा पड़ा है। मुझे पूरी आशा है कि दयानंद के काम को पूरा करने के लिए, पाप की लंका का विध्वंस करने के लिए तुम्हीं में से महावीर निकलेंगे।'

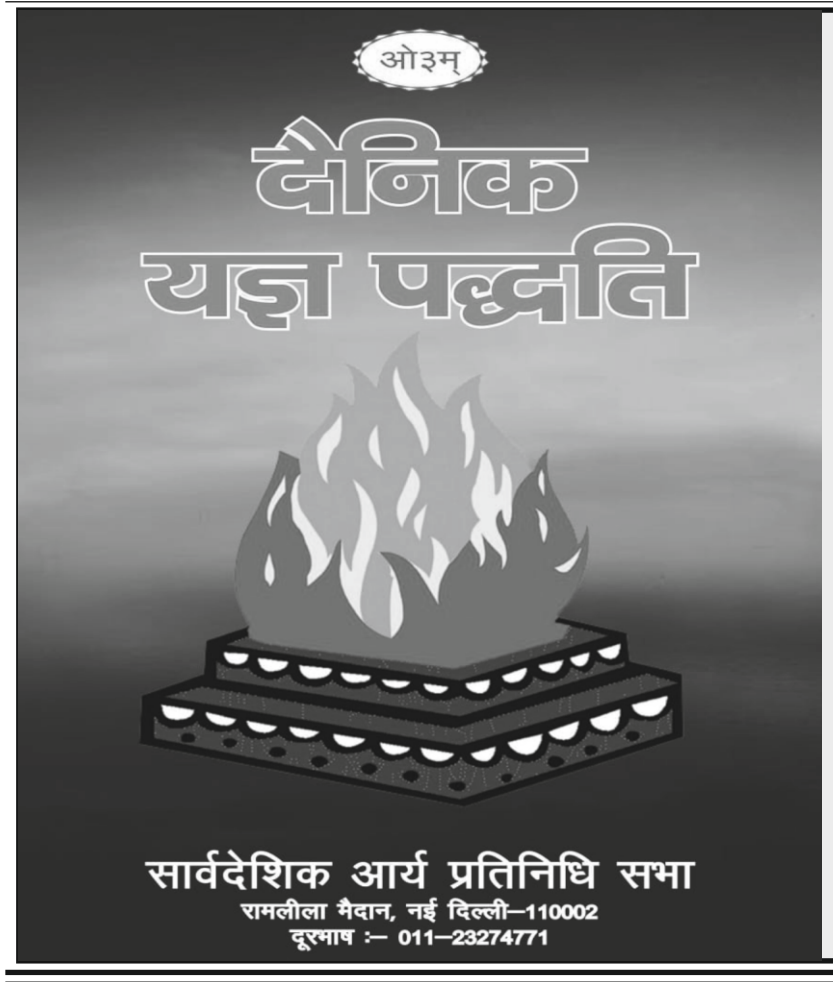

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्‌यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल धीरणवास का 50वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

इन महानुभावों को किया गया सम्मानित

कार्यक्रम के दौरान समय–समय पर गुरुकुल धीरणवास को अपना विशेष सहयोग देने वाले विशेष सहयोगियों को इस सम्मेलन में सम्मानित किया गया। जिनमें श्री रामपाल सिंह पूर्व चेयरमैन, श्री जगदीशचंद्र धीरणवास, श्री सुमेर सिंह सांगवान, सेठ मांगेराम, श्री सतवीर नंबरदार, श्री भूपसिंह सिसवाला, श्री ईश्वरसिंह यादव, जगबीर हरिता, श्री तेलूराम आर्य, अजमेर सिंह, श्री सत्यकाम आर्य,निशा गोयल, श्री बृजमोहन बुडाकिया, चौधरी करतार सिंह सिवाच, श्री जसवीर आर्य, श्री रवि आर्य, श्री चरण सिंह कस्वां, डॉ.राजवीर शास्त्री फतेहाबाद, श्री रामकुमार आर्य, श्री रामफल सीगड़, श्री कृष्ण आर्य रावलवास सूबेदार हरि सिंह सरसाना, आजाद मुनि हिसार, श्री रामस्वरूप कालीरामणा, श्री खजान सिंह परिहार, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री सत्य प्रकाश आर्य हिसार, सुमेर सिंह कस्वां, श्री शोभाचंद आर्य, मास्टर दिलीप सिंह गौरछी, श्री रामकिशन पंवार, श्री महेंद्र आर्य, आर्य नगर, सुरेंद्र आर्य, सतपाल अग्रवाल हिसार आदि के नाम सम्मलित हैं। कुछ व्यक्ति कार्यक्रम में नही पहुंच सके, उनको सम्मान पत्र गुरुकुल कार्यकारिणी की ओर से घर जाकर भेंट किया गया।

सम्मान समारोह के बाद शिक्षा सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जो 2.00 से 4.00 बजे तक चला जिसकी अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय हिसार के पूर्व उपकुलपति श्री कृष्ण सिंह खोखर ने की जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, श्री नरदेव बेनीवाल जी ने भी अपने विचार रखे। व्यायाम सम्मेलन का आयोजन 4.00 से 5.00 बजे तक किया गया जिसमें मुख्य अतिथि चीफ इंजीनियर श्री वेद प्रकाश सोनी मुकलान वाले रहे। इस कार्यक्रम का संचालन श्री सोनू आर्य जी ने किया इस अवसर पर गुरुकुल धीरणवास, गुरुकुल आर्य नगर, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के दैनिक शाखा के ब्रह्मचारियों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। बच्चों की प्रस्तुतियाँ देखकर सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत भी किया। स्वामी आर्यवेश जी, श्री दलबीर आर्य, श्री जगदीश आर्य व श्री महेंद्र आर्य ने मुख्य अतिथि का स्वागत भी किया। ठीक 6.00 बजे सामूहिक संध्या आचार्य देवदत्त शास्त्री जी द्वारा करवाई गई। सायं 7.00 से 10.00 बजे तक एक शाम ऋषि दयानन्द जी के नाम से कार्यक्रम आयोजित किया गया जो विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

5 दिसम्बर, 2021 को प्रातः 8.00 से 10.00 बजे तक यज्ञ आयोजित किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य देवदत्त शास्त्री जी रहे तथा मुख्य उपदेश सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कन्या गुरुकुल डोभी के कुलपति श्री बलजीत आर्य जी का रहा। इस अवसर पर कॉसमॉस पब्लिक स्कूल के संचालक व स्वामी सर्वदानन्द जी के विशेष सहयोगी श्री महेंद्र सिंह पायल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला देवी, श्री रामफल वर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राधा देवी, पूर्व सरपंच श्री सुरेंद्र सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज देवी, श्री बलराज मलिक व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनु मलिक, श्री राजवीर वशिष्ठ टिटौली, डॉ. विवेकानंद शास्त्री रोहतक, श्री तेलूराम आर्य, डॉ. मिश्रीलाल, कैप्टन सुबे सिंह धीरणवास मुख्य यज्ञमान रहे। श्री सहसरपाल आर्य, श्री सोनू आर्य, श्री अशोक आर्य खटकड़, पूर्व स्नातक श्री अशोक आर्य, श्री कृष्ण आर्य रावलवास, श्री नरेंद्र कुमार, श्री विक्रम सिंह आदि ने व्यवस्था संभाली। वेद पाठ का कार्यभार कन्या गुरुकुल डोभी की ब्रह्मचारिणियों ने संभाला।

प्रातः 10 से 1 बजे तक आजादी का अमृत महोत्सव व राष्ट्ररक्षा सम्मेलन गुरुकुल प्रांगण में संचालित हुआ इसकी अध्यक्षता आर्य नेता हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौधरी हरी सिंह सैनी जी ने की। इसमें मुख्य अतिथि नाड़ी वैद्य कायाकल्प के संचालक व प्रसिद्ध वैद्य श्री सत्य प्रकाश आर्य जी रहे और विशिष्ट अतिथि गुरुकुल के पूर्व स्नातक स्वामी सर्वदानन्द जी के विशेष विश्वासपात्र शिष्य पुनिया कंस्ट्रक्शन कम्पनी के मालिक श्री बनवारी लाल पुनिया जी रहे।

इस अवसर पर हिसार की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था आदर्श एकेडमी के निदेशक श्री सुरेंद्र पूनिया जी ने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा को नैतिक मूल्यों पर आधारित बनाने से सम्बन्धित अपने विचार रखे तथा लोगों को प्रेरित किया कि वह संस्कारित युवाओं को तैयार करें ताकि देश सही दिशा में जा सके। उन्होंने अपनी ओर से गुरुकुल परिसर में भोजनालय के लिए विशेष सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, संजय बुरा, विकास डिफेंस एकेडमी, मुकेश आर्या, भिवानी ने भी अपने–अपने विचार रखे। बहन कल्याणी आर्या एवं श्री नरदेव आर्य पलवल ने इस सम्मेलन में देशभक्ति गीतों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए तथा देश की आजादी के आंदोलन में आर्य समाज के योगदान पर भी विस्तार से चर्चा की गई। गुरुकुल धीरणवास के बच्चों ने कविता, भाषण व भजन सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कन्या गुरुकुल डोभी की बेटियाँ तथा बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता पूजा आर्या व एकता आर्या ने भी भजन प्रस्तुत किये।

दोपहर 1 से 2.30 बजे तक गुरुकुल के विशेष सहयोगियों का सम्मान स्वामी आर्यवेश जी, वैद्य श्री सत्य प्रकाश आर्य जी व गुरुकुल की कार्यकारिणी द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता इलाके के वरिष्ठ नेता श्री रणधीर सिंह परिहार ने की, विशिष्ट अतिथि आर्य समाज नागोरी गेट के मंत्री श्री नरेन्द्र पाल मिगलानी जी रहे तथा मुख्य वक्ता के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विरजानंद एडवोकेट ने अपने सारगर्भित विचार रखते हुए वर्तमान

समय में आर्य समाज की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला।

सायंकाल 3.00 बजे व्यायाम सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें कन्या गुरुकुल डोभी की बहनों ने स्वयं सुरक्षा के करतबों का प्रदर्शन किया तथा योगासनों की भी सुन्दर प्रस्तुति दी गई। सभी ने इन बेटियों का जोरदार अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर सभी संन्यासियों, अतिथियों, विद्वानों व गुरुकुलों के आचार्यों तथा सहयोगी आर्य समाजों के पदाधिकारियों का गुरुकुल धीरणवास, हिसार की कार्यकारिणी की ओर से स्मृति चिन्ह व ओ३म् पट्ट पहनाकर स्वागत किया गया।

गुरुकुल के मंत्री श्री दलबीर आर्य ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी अतिथियों, सहयोगियों, भोजन बनाने वालों, माइक आदि की व्यवस्था करने के लिए श्री राकेश आर्य तथा टैंट की सुंदर व्यवस्था के लिए मलिक टैंट हाउस का भी विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ। आचार्य देवदत्त ने अंत मे जय घोष बुलवाकर जाते समय भी आर्यों में जोश भरने का कार्य किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में जहां गुरुकुल कार्यकारिणी के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा वहीं आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं तथा गुरुकुल के पूर्व स्नातकों का भी विशेष सहयोग रहा जिनमें प्रदेश कार्यकारी प्रधान श्री सज्जन सिंह राठी महामंत्री श्री ऋषि राज शास्त्री संगठन मंत्री डॉक्टर विवेकानंद शास्त्री प्रांतीय उपप्रधान जय पाल आर्य मौलिक अध्यापक संघ हरियाणा के महासचिव अशोक आर्य राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता श्री प्रदीप कुमार परिषद के प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री हरपाल आर्य, श्री अजीत पाल आर्य, जिला उपप्रधान श्री जयवीर आर्य मुगलान, श्री बलवंत आर्य न्याणा, यूथ लाइव चैनल के निदेशक श्री वीरेंद्र आर्य, फ्लाई डिजायर चैनल के निदेशक श्री गोयल व मिशन आर्यावर्त्त की निदेशक श्री मुकेश आर्य के अतिरिक्त गुरुकुल के पूर्व स्नातक श्री दिनेश कुमार आर्य, श्री महेंद्र कुमार आर्य, श्री अशोक कुमार आर्य व उनकी पूरी टीम तथा श्री नत्थू सिंह, श्री विक्रम, श्री नरेंद्र, श्री दीपक आदि ने कार्यक्रम की व्यवस्था में पूरी मेहनत करके उसे सफल बनाया। कार्यक्रम को सफलता के साथ सम्पन्न कराने में आर्य समाज आर्य नगर, आर्य समाज बालसमंद, आर्य समाज सरसाना, आर्य समाज गोरछी, आर्य समाज बोदीवाली, आर्य समाज फतेहाबाद,आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार, गुरुकुल आर्य नगर, गुरुकुल मताना डिग्गी, कन्या गुरुकुल डोभी, आर्य समाज डोभी, विकाश डिफेंस अकेडमी, राजकीय उच्च विद्यालय धीरणावस, आर्य समाज लाडवा, आर्य समाज मुकलान आदि संस्थाओं का भी विशेष सहयोग रहा।

कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉक्टर कृष्ण सिंह खोखर ने शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सरल व ईमानदारी का जीवन जीने वाले व्यक्ति ही समाज को नई दिशा दे सकते हैं।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करें तथा उसको प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियाँ नारे बदलने से नहीं मानसिकता बदलने से बचेंगी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य कायाकल्प रोहतक के संचालक वैद्य सत्यप्रकाश आर्य जी ने कहा कि आयुर्वेद का सहारा लेकर हम पूरी दुनिया को आरोग्य का सूत्र दे सकते हैं। रोगी शरीर व रोगी मन कभी अच्छे व बड़े कार्य नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि यदि हम भोजन करने में सावधानी रखें तो भी स्वस्थ रह सकते हैं।

ऑवर्स एकेडमी के संचालक श्री सुरेंद्र पुनिया जी ने कहा कि मैं बचपन से ही इस गुरुकुल में आने के लिए सोचता था। मैं अपने पिता के साथ इस गाँव में आता था। परन्तु गुरुकुल के प्रांगण में नही आ सका था। फिर पिता जी की प्रेरणा से गुरुकुल के सिस्टम को देखा व पढ़ा उसी का परिणाम है कि हमारी एकेडमी ने दो वर्ष में हरियाणा में अपना नाम कमाया।

इलाके के वरिष्ठ नेता श्री रणधीर पनिहार ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मैं आज कार्यक्रम में शामिल हुआ। उन्होंने कहा कि आज समाज में सेवाभावी युवाओं की आवश्यकता है और ऐसे युवा सिर्फ गुरुकुल परम्परा से ही तैयार किये जा सकते हैं।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। हमें गर्व है कि आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द जी के अनुयायियों का देश की आजादी में सर्वाधिक योगदान रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय जी, सरदार भगत सिंह जी , रामप्रसाद बिस्मिल जी, भाई परमानंद जी आदि आर्य समाज की पृष्ठभूमि के रहे हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरुकुल के पूर्व स्नातक व स्वामी सर्वदानन्द के विशेष शिष्यों में से एक रहे पुनिया कंस्ट्रक्शन कंपनी के मालिक श्री बनवारी लाल पूनिया जी ने कहा कि यह गुरुकुल की देन है कि मैं हर प्रकार के पाखंड व दुर्व्यसनों से बचा हुआ हूँ। स्वामी सर्वदानन्द जी ने मुझे कहा था कि इस गुरुकुल को सहयोग करके आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी आपकी है। मैं उनके इस आदेश व संकल्प को अपने दिल से स्वीकार करता हुआ निरंतर गुरुकुल का सहयोग कर रहा हूँ तथा आगे भी करता रहूँगा। इस अवसर पर भी उन्होंने अपनी ओर से 2 लाख 51 हजार रुपये की दान राशि देकर गुरुकुल का विशेष सहयोग भी किया।

कन्या गुरुकुल डोभी के कुलपति श्री बलजीत सिंह आर्य ने कहा कि हम ऋषि दयानन्द सरस्वती के ऋणी हैं उन्होंने हमें ईश्वर प्राप्ति का रास्ता दिखाया तथा पंच महायज्ञ की विधि व कर्तव्य बताए।

डॉ. नेपाल सिंह ने कहा कि असल विकास मानव का निर्माण है। आज जिस विकास को दिखाया जा रहा है वह असल विकास नहीं है। शिक्षा के माध्यम से हम मनुर्भव के संकल्प को पूरा कर सकते हैं।

समाज सुधार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री व कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि चौधरी कंवल सिंह जी ने बताया कि मेरे पिता जी मेरे गाँव के पहले आर्य समाजी बने उन्हीं के संस्कार मुझे विरासत में मिले। उसका परिणाम यह रहा कि मैं हमेशा अंधविश्वास से दूर रहा। समाज को सुधारने के लिए शुरुआत अपने घर से करनी चाहिए।

व्यायाम सम्मेलन के मुख्य अतिथि युवा मर्चेंट नेवी में चीफ इंजीनियर श्री वेदप्रकाश आर्य ने कहा कि मेरी प्रारम्भिक पढ़ाई गुरुकुल में हुई और उसका परिणाम यह हुआ कि मैं आज दुनिया के कोने–कोने में जाता हूँ लेकिन अपने भारतीय संस्कार को नहीं छोड़ता। यह सब मेरे बड़ों के द्वारा दिये गए संस्कारों तथा गुरुकुल की शिक्षा के कारण सम्भव हुआ है।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।